द्वितीयः पाठः

# सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलम् अर्थः

0902CH02




भारतीयधर्मशास्त्रेषु अनेकाः सूक्तयः विद्यन्ते, याः मानवजीवनस्य यथार्थतत्त्वं प्रतिपादयन्ति। तेष्वेकं प्रसिद्धं सूत्ररूपं वाक्यं कौटिल्यस्य *अर्थशास्त्रे* अस्ति —

**" सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः।"**

अस्य आशयः अस्ति यत् वास्तविकसुखस्य आधारः धर्मः, धर्मपालनस्य च आधारः अर्थः। अर्थः इत्युक्ते धनं, यत् सर्वविधस्य आजीविकाव्यवहारस्य प्रमुखं साधनम्।

जीवने धर्मः, अर्थः, सुखम् इत्येतेषां त्रयाणां परस्परसम्बन्धः अविच्छिन्नः अस्ति। यः जनः न्यायपूर्वकम् अर्थोपार्जनं करोति, सः धर्मपालनं कर्तुं समर्थः भवति, धर्मपालनेन च दीर्घकालिकं सुखं लभते।



सामान्यजीवने अन्नं, वस्त्रम्, आवासः, शिक्षा, स्वास्थ्यसेवा चेत्यादीनां मूलभूतानाम् आवश्यकतानां पूर्तये धनम् आवश्यकम्। पर्याप्तधनस्य अभावात् स्वकर्तव्यपालनं कठिनं भवति। स्वास्थ्यं, शिक्षा, सेवा, दानम् चेत्यादीनि कार्याणि बाधितानि भवन्ति। दैनन्दिनजीवनं च असन्तुलितं भवति। अतः धर्मशास्त्रे चतुर्वर्गेषु धर्मार्थकाममोक्षेषु अर्थः



© NCERT not to be republished

अन्यतमः स्तम्भः इति गण्यते। उक्तं *गरुडपुराणे* —

**"ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्ममर्थं च चिन्तयेत्।"**

अर्थात् दिनस्य आरम्भे धर्मार्थयोः चिन्तनम् आवश्यकम्।

स्वस्थः आर्थिकव्यवहारः त्रिविधः भवति —

**न्यायपूर्णम् अर्थोपार्जनम्** — सन्मार्गेण एव धनार्जनं करणीयम् इति। उक्तं भगवता मनुना —

**सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।**
**योऽर्थे शुचिर्हि सः शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः॥**

अस्य आशयः यत् अनैतिकः आर्थिकव्यवहारः कदापि न करणीयः।

**"मा गृधः कस्यस्विद्धनम्"** इति उपनिषदः वाक्यं सततं मनसि निधाय स्वकौशलेन विद्यया च धनम् उपार्जनीयम्।

**औचित्यपूर्णः व्ययः** — आवश्यकतानुसारं व्ययः करणीयः। येन व्ययेन स्वास्थ्यलाभः विद्यार्जनम् आत्मसुरक्षा वा भवेत्, सः व्ययः अवश्यं करणीयः। आडम्बरपूर्णः प्रदर्शनकारी व्ययः अथवा विलासव्यसनाय व्ययः अपव्ययः भवति। अपव्ययः वर्जनीयः, अतः प्रत्येकं व्ययस्य लेखः स्थापनीयः। अन्ते च तेषां परिशीलनं करणीयम्।



**भविष्यदृष्ट्या सञ्चयः** — उपार्जितधनस्य कश्चन भागः भविष्यसुरक्षायै सञ्चयनीयः। सञ्चयस्य अभ्यासेन जनः स्वावलम्बी भवति। स्वावलम्बनं स्वाभिमानस्य मूलं वर्तते। संकटकालेऽपि स्वाभिमानिजनः अन्यजनस्य आर्थिकसहायतां नापेक्षते।

© NCERT not to be republished




- **छात्रजीवने आर्थिकसाक्षरता**

अनेकदा छात्राः मातापितृभ्यां कष्टार्जितधनस्य तुच्छकारणैः अपव्ययं कुर्वन्ति। जिह्वालालसापूर्त्यर्थं त्वरिताहाराः, शीतपेयं, पुटीकृतभोजनं, तथैव व्यसनपदार्थानां सेवनं, प्रदर्शनकारिपरिधानं विलासितापूर्णम् आचरणं चेत्यादि यत्र प्रभूतः अपव्ययः भवति। एतैः न केवलं धनहानिः, स्वास्थ्यहानिरपि जायते। स्वास्थ्यहानिकारणात् पुनः धनव्ययो वर्धते।

**अर्जितस्य सञ्चयः सञ्चितस्य च निवेशः**

चाणक्यनीतौ उक्तम्—

**जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।**
**स क्रमः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥**



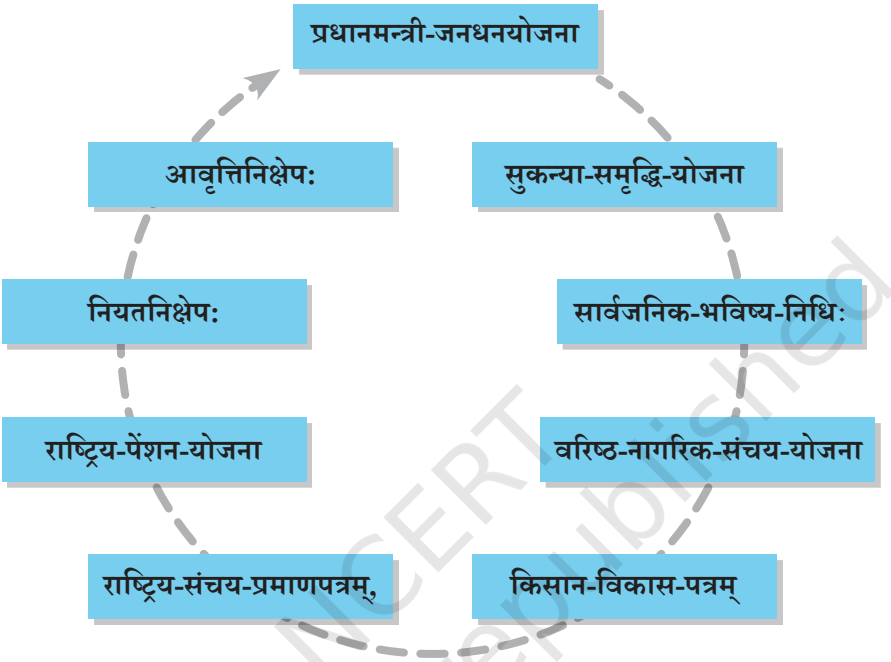
लघु-लघुः सञ्चयोपि कालान्तरे महत्सम्पत्तिरूपेण वर्धते। यदि छात्राः प्रतिदिनम् अल्पधनस्यापि सञ्चयं कुर्वन्ति, तस्य उचितनिवेशं च कुर्वन्ति तर्हि तेषां भविष्यं सुरक्षितं भवेत्। भारतदेशे धनसञ्चयस्य सुरक्षितनिवेशस्य च कृते बहुविधाः मार्गाः सन्ति। तेषु प्रधानमन्त्री-जनधनयोजना, सुकन्या-समृद्धि-योजना, सार्वजनिक-भविष्य-निधिः,



वरिष्ठ-नागरिक-संचय-योजना, किसान-विकास-पत्रं, राष्ट्रिय-संचय-प्रमाणपत्रं, राष्ट्रिय-पेंशन-योजना, नियतनिक्षेपः, आवृत्तिनिक्षेपः चेत्याद्याः प्रमुखाः सन्ति। एतासां सर्वकारीययोजनानां विषये सूचनाः

© NCERT not to be republished

लब्धुं लाभमवाप्तुं च समीपस्थवित्तागाराः पत्रालयाः वा गन्तव्याः, तत्सम्बद्धाः अधिकारिणः च प्रष्टव्याः। एतासु योजनासु न केवलं कष्टार्जितधनस्य सुरक्षा भवति अपि तु चक्रवृद्ध्यंशेन सह तद्धनं सततं वर्धमानं भवति।




© NCERT not to be republished

भौतिकतावादियुगस्य आकर्षणेन यूनामपव्ययः अधिको भवति येन कारणेन अस्माकम् आर्थिकस्थितिः विपन्ना भवति। किन्तु अर्थविषयकसचेतनता अस्मान् अभावात् उद्धृत्य आर्थिकसम्पन्नतां प्रति नयति। अतः बुद्धिमतां छात्राणां ध्येयं स्यात्—धनस्य उचितोपार्जनम्, व्ययस्य मर्यादा, आपत्कालीननिधिसञ्चयः, दीर्घकालीननिवेशश्च। यः एतेषाम् अनुशासनेन पालनं करोति, स एव यथार्थतः धनस्य धर्मस्य च सन्तोलनं स्थापयितुं शक्नोति। यः विद्यार्थी अद्य अर्थविषये जागरूकोऽस्ति, सः भविष्ये उत्तरदायी नागरिको भवति। धर्मः, अर्थः, सुखम् चेत्येतेषां सन्तोलनम् एव यथार्थजीवनस्य लक्षणम्। अत एवोक्तम्—

**क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्।**
**क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्॥**

## सर्वं शब्देन भासते

| शब्दः | अर्थः | हिन्दी | English | मातृभाषया अर्थं लिखत |
|---|---|---|---|---|
| अपव्ययः (पुं.प्र.ए.व.) | व्यर्थव्ययः | अनुचित व्यय | Unnecessary expense | |
| अवाप्तुम् (अव + √आप् + तुमुन्, अव्ययम्) | प्राप्तुम् | प्राप्त करने के लिए | To get | |
| अविच्छिन्नः (नञ् तत्पुरुषः, पुं.प्र.ए.व.) | न विच्छिन्नः | अटूट | Inseparable | |
| अर्जितस्य (√अर्ज् + क्त, पुं.ष.ए.व.) | उपार्जितस्य | कमाए हुए का | Of the earned | |
| अर्थोपार्जनम् (ष.तत्पुरुषः, नपुं.प्र.ए.व.) | अर्थस्य उपार्जनम् | धन कमाना | Earning | |
| आजीविका (स्त्री.प्र.ए.व.) | वृत्तिः | व्यवसाय | Livelihood | |
| आडम्बरपूर्णः (पुं.प्र.ए.व.) | पाखण्डयुक्तः | दिखावे से भरा | Ostentatious | |
| आर्थिकव्यवहारः (पुं.प्र.ए.व.) | धनविषयकः व्यवहारः | आर्थिक लेन-देन | Financial behavior | |
| आर्थिकसाक्षरता (कर्मधारयः स्त्री.प्र.ए.व.) | आर्थिकी साक्षरता | वित्तीय साक्षरता | Financial literacy | |

© NCERT not to be republished

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आवृत्तिनिक्षेपः (पुं.प्र.ए.व.) | आवृत्तिनिक्षेपः | आवर्ती जमा | Recurring Deposit (RD) | |
| उचितनिवेशम् (पुं.द्वि.ए.व.) | साधुनिवेशम् | योग्य निवेश | Proper investment | |
| उद्धृत्य (उद् + √धृ + ल्यप्) | उद्धारं कृत्वा | ऊपर उठाकर | By lifting up | |
| औचित्यपूर्णः (पुं.प्र.ए.व.) | समुचितः | उपयुक्त | Justified | |
| कष्टार्जितधनस्य (कर्मधारयः, नपुं.ष.ए.व.) | कष्टेन अर्जितम् कष्टार्जितम् कष्टार्जितं धनं, तस्य | कष्ट से कमाए हुए धन का | Of the wealth earned with difficulty | |
| कालान्तरेण (नपुं.तृ.ए.व.) | अन्यः कालः, तेन | समय बीतने पर | By the course of time | |
| किसान-विकास-पत्रम् (नपुं.प्र.ए.व.) | कृषकस्य विकासः किसानविकासः, तदर्थं पत्रम् | किसान विकास पत्र | Kisan Vikas Patra (KVP) | |
| चक्रवृद्ध्यंशेन (तृ.तत्पुरुषः, पुं.तृ.ए.व.) | चक्रवृद्ध्या अंशेन | चक्रवृद्धि ब्याज से | By Compound Interest | |
| तुच्छकारणैः (कर्मधारयः, नपुं.तृ.ब.व.) | तुच्छं कारणम्, तैः | निरर्थक कारणों से | For trivial reasons | |
| त्वरिताहारः (कर्मधारयः, पुं.प्र.ए.व.) | त्वरितः चासौ आहारः | शीघ्र आहार | Fast Food | |
| नियतनिक्षेपः (मध्यपद-लोपी कर्मधारयः, पुं.प्र.ए.व.) | नियतकालिकः निक्षेपः | निश्चित अवधि के लिए जमा | Fixed Deposit (FD) | |

© NCERT not to be republished

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| न्यायपूर्णम् (तृतीया-तत्पुरुषः, नपुं.प्र.ए.व.) | न्यायेन पूर्णम् | न्यायसङ्गत | Justified | |
| पुटीकृतभोजनम् (कर्मधारयः, नपुं.प्र.ए.व.) | पुटीकृतं भोजनम् | डिब्बाबन्द खाना | Packaged food | |
| पूर्तये (स्त्री.च.ए.व.) | सम्पूर्तिनिमित्तम् | उपलब्ध कराने के लिए | To fulfill | |
| प्रदर्शनकारिपरिधानम् (कर्मधारयः, नपुं.प्र.ए.व.) | प्रदर्शनकारि परिधानम् | प्रदर्शनकारी वेशभूषा | Fashionable attire | |
| प्रभूतः (पुं.प्र.ए.व.) | प्रचुरम् | पर्याप्त | Abundant | |
| प्रधानमन्त्री-जन धन योजना (स्त्री.प्र.ए.व.) | प्रधानमन्त्री-जन धन योजना | प्रधानमन्त्री जन धन योजना | Pradhan Mantri Jana Dhana Yojna | |
| बाधितानि (नपुं.प्र.ब.व.) | अवरोधितानि | बाधित होते हैं | Interrupted | |
| मा (अ) गृधः (पुं.प्र.ए.व.) | लोभं न कुरु | लालच न करो | Don't covet | |
| मूलभूतानाम् (नपुं.ष.ब.व.) | मूले भूतम्, तेषाम् | मौलिक | Basic | |
| यथार्थतत्त्वम् (नपुं.प्र.ए.व.) | यथार्थं तत्त्वम् | वास्तविक तत्त्व | True essence | |
| राष्ट्रिय-पेंशन-योजना (स्त्री.प्र.ए.व.) | राष्ट्रिय-पेंशन-योजना | राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली | National Pension System (NPS) | |

© NCERT not to be republished

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| राष्ट्रिय-संचय-प्रमाणपत्रम् (नपुं.प्र.ए.व.) | राष्ट्रिय-संचय-प्रमाणपत्रम् | राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र | National Savings Certificate (NSC) | |
| वरिष्ठ-नागरिक-संचय-योजना (स्त्री.प्र.ए.व.) | वरिष्ठ-नागरिक-संचय-योजना | वरिष्ठ नागरिक बचत योजना | Senior Citizens' Savings Scheme (SCSS) | |
| विलासव्यसनाय (नपुं.च.ए.व.) | विलासश्च व्यसनञ्च, तस्मै | सुख भोग के लिए | For luxury and enjoyment | |
| विपन्ना (स्त्री.प्र.ए.व.) | सम्पन्नतारहिता | संकटग्रस्त | Destitute | |
| शीतपेयम् (कर्मधारय, नपुं. प्र.ए.व.) | शीतं पेयम् | मृदु पेय | Soft Drinks | |
| शुचिः (पुं.प्र.ए.व.) | पवित्रः | शुद्ध | Clean | |
| सचेतनता (स्त्री.प्र.ए.व.) | विवेकः | जागरूकता | Consciousness | |
| सञ्चयः (पुं.प्र.ए.व.) | सङ्ग्रहः | संचय | Accumulation | |
| सन्तोलनम् (नपुं.प्र.ए.व.) | समन्वयः | सन्तुलित करना | Balance | |
| सुकन्या-समृद्धि-योजना (स्त्री.प्र.ए.व.) | सुकन्या-समृद्धि-योजना | सुकन्या समृद्धि योजना | Sukanya Samriddhi Yojna | |
| सूत्ररूपम् (नपुं.प्र.ए.व.) | संक्षेपरूपम् | संक्षिप्त रूप | Aphoristic form | |
| स्वावलम्बी (पुं.प्र.ए.व.) | आत्मनिर्भरः | स्वावलम्बी | Self-reliant | |

© NCERT not to be republished

## अत्र इदम् अवधेयम्

**चक्रवृद्ध्यंशः**

चक्रवृद्ध्यंशः तादृशः वृद्ध्यंशः वर्तते यस्मिन् मूलधनेन सह वृद्ध्यंशस्य उपरि अपि वृद्ध्यंशः अर्ज्यते। येन कालान्तरेण धनस्य वृद्धिः अतिशीघ्रं भवति।

**यथा**— यदि भवान् ₹1000 निवेशं करोति, तत्र 10% वार्षिकं वृद्ध्यंशम् अर्जयति तर्हि प्रथमवर्षस्य अन्ते भवान् आहत्य ₹1100 धनं प्राप्स्यति।

द्वितीयवर्षे ₹1000 इत्यस्य स्थाने ₹1100 राशेः उपरि वृद्ध्यंशं प्राप्स्यति।

अनेन द्वितीयवर्षस्य अन्ते भवतः राशिः आहत्य ₹1210 यावत् वर्धते।

चक्रवृद्ध्यंशः कथं कार्यं करोति? इति अनया सारिण्या स्पष्टं भविष्यति—

| वर्षाणि | आरम्भिकधनम् | वार्षिकः वृद्ध्यंशः (10%) | चक्रवृद्ध्यंश-सहितं धनम् | साधारणवृद्ध्यंशेन सह धनम् |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 1,000.00 | 100.00 | 1,100.00 | 1100 |
| 2. | 1,100.00 | 110.00 | 1,210.00 | 1200 |
| 3. | 1,210.00 | 121.00 | 1,331.00 | 1300 |
| 4. | 1,331.00 | 133.10 | 1,464.10 | 1400 |
| 5. | 1,464.10 | 146.41 | 1,610.51 | 1500 |
| 6. | 1,610.51 | 161.05 | 1,771.56 | 1600 |
| 7. | 1,771.56 | 177.16 | 1,948.72 | 1700 |
| 8. | 1,948.72 | 194.87 | 2,143.59 | 1800 |
| 9. | 2,143.59 | 214.36 | 2,357.95 | 1900 |
| 10. | 2,357.95 | 235.80 | 2,593.74 | 2000 |

**सारः**—

- निवेशितं मूलधनम्— 1,000
- वार्षिकः चक्रवृद्ध्यंशः— 10%
- दशवर्षानन्तरं धनस्य मूल्यम्— 2,593.74

© NCERT not to be republished

**निगमनम्**—अनेन इदं सिद्धं यत् चक्रवृद्ध्या निवेशितं धनं शीघ्रं वर्धते यतोहि निवेशकर्ता न केवलं स्वस्य मूलधनस्य अपितु अर्जितवृद्ध्यंशस्य अपि उपरि वृद्ध्यंशम् अर्जयति। दीर्घकालीनसञ्चयस्य निवेशस्य च कृते एतत् किञ्चन सुशक्तं साधनमस्ति।

**गणनाकार्यम् (छात्राः कुर्वन्तु)**—उपर्युक्तगणनायाः आधारेण ₹1000 निवेशितस्य मूलधनस्य पञ्चदशवर्षेषु विंशतिवर्षेषु वा चक्रवृद्ध्या सकलधनराशेः परिमाणं लिखत।



## अभ्यासाद् जायते सिद्धिः

**१. एकपदेन उत्तरं लिखत—**

(क) वास्तविकसुखस्य आधारः कः? .....

(ख) कस्य अभावात् स्वकर्तव्यपालनं कठिनं भवति? .....

(ग) स्वस्थः आर्थिकव्यवहारः कतिविधः भवति? .....

(घ) कीदृशः आर्थिकव्यवहारः कदापि न करणीयः? .....

(ङ) स्वावलम्बनं कस्य मूलं वर्तते? .....

(च) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः किं पूर्यते? .....

**२. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत—**

(क) "सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः" इतीदं प्रसिद्धं वाक्यं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?

.....

(ख) सामान्यजीवने कासाम् आवश्यकतानां पूर्त्यर्थं धनम् आवश्यकम्?

.....

(ग) ब्राह्मे मुहूर्ते कयोः चिन्तनम् आवश्यकम्?

.....

© NCERT not to be republished

(घ) जनः केन स्वावलम्बी भवति?

.....

(ङ) लघुलघुसञ्चयः अपि कालान्तरे केन रूपेण वर्धते?

.....

**३. वाक्येन सह ग्रन्थस्य सम्मेलनं कुरुत —**

| | |
|---|---|
| (क) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। | १. *गरुडपुराणम्* |
| (ख) ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्ममर्थं च चिन्तयेत्। | २. *मनुस्मृतिः* |
| (ग) सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्। | ३. *अर्थशास्त्रम्* |
| (घ) सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः। | ४. *चाणक्यनीतिः* |

**४. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत —**

(क) सुखस्य मूलं धर्मः।

.....

(ख) दिनस्य आरम्भे धर्मार्थयोः चिन्तनम् आवश्यकम्।

.....

(ग) सन्मार्गेण एव धनार्जनं करणीयम्।

.....

(घ) अनैतिकः आर्थिकव्यवहारः कदापि न करणीयः।

.....

(ङ) संकटकाले स्वाभिमानिजनः अन्यजनस्य आर्थिकसहायतां नापेक्षते।

.....

**५. उचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत —**

| विद् | विद्यते | विद्येते | विद्यन्ते |
|---|---|---|---|
| लभ् | ..... | लभेते | लभन्ते |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| अपेक्ष् | अपेक्षते | ..... | अपेक्षन्ते |
| वर्ध् | ..... | वर्धेते | ..... |
| सेव् | ..... | ..... | सेवन्ते |
| मोद् | मोदते | ..... | ..... |

## ६. अधोलिखितानां प्रश्नानां शुद्धं विकल्पं चिनुत —

(क) "सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः" इत्यस्य मुख्य आशयः कः अस्ति?

(१) सुखस्य आधारः केवलम् अर्थः एव।

(२) धर्मस्य आधारः केवलं सुखम् एव।

(३) धर्मस्य आधारः अर्थः, सुखस्य आधारः धर्मः।

(४) सुखं, धर्मः, अर्थः – एतेषां मध्ये सम्बन्धः नास्ति।

(ख) *गरुडपुराणे* किम् उपदिष्टम् अस्ति?

(१) रात्रौ धनस्य चिन्तनं करणीयम्।

(२) प्रभाते धर्मार्थयोः चिन्तनं करणीयम्।

(३) केवलं धर्मचिन्तनं करणीयम्।

(४) केवलम् अर्थचिन्तनं करणीयम्।

(ग) "सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्" इत्यस्य तात्पर्यं किम्?

(१) जलशौचमेव श्रेष्ठम्।

(२) मृद्वारिशौचमेव श्रेष्ठम्।

(३) अर्थशौचं सर्वोपरि, अन्यविधशौचेभ्यः श्रेयः।

(४) शौचस्य आवश्यकता नास्ति।

(घ) छात्रैः क्रियमाणः अपव्ययः कः?

(१) स्वास्थ्यलाभाय व्ययः।

(२) विद्यार्जनाय व्ययः।

© NCERT not to be republished

(३) आडम्बरयुक्तः प्रदर्शनात्मकः व्ययः।

(४) आत्मसुरक्षायै व्ययः।

(ङ) "जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः" इति वाक्यं कः अवदत्?

(१) बृहस्पतिः (२) चाणक्यः

(३) मनुः (४) याज्ञवल्क्यः



## स्वाध्यायान्मा प्रमदः

**छात्राः** अभिभावकैः सह समीपस्थं वित्तकोषम् अथवा पत्रालयं गत्वा प्रधानमन्त्री-जनधनयोजना (PMJDY), सुकन्या-समृद्धि-योजना (SSY), सार्वजनिक-भविष्य-निधिः (PPF), वरिष्ठ-नागरिक-संचय-योजना (SCSS), किसान-विकास-पत्रम् (KVP), राष्ट्रिय-संचय-प्रमाणपत्रम् (NSC), राष्ट्रिय-पेंशन-योजना (NPS), नियतनिक्षेपः (FD), आवृत्तिनिक्षेपः (RD) चेत्यादियोजनानां विषये ज्ञानं प्राप्नुयुः। एकस्याः योजनायाः विषये टिप्पणीं च लिखेयुः।



## यस्तु क्रियावान् मनुजः स विद्वान्

१. अस्मिन् पाठे पठितानां सूक्तीनां श्लोकानां च आशयं स्वभाषया विलिख्य शिक्षकाय दर्शयत।

२. भवन्तः स्वजीवने अपव्ययात् कथं दूरे स्थातुं शक्नुवन्ति? अस्मिन् विषये उपायान् लिखत।

३. स्वस्य एकस्य मासस्य आय-व्ययविवरणं विलिख्य शिक्षकाय दर्शयत।

४. जलस्य संरक्षणं कैः उपायैः करणीयमिति कक्षायां चर्चयत सचित्रं प्रदर्शयत च।

५. विद्युतः संरक्षणं कथं कर्तुं शक्यते तस्य चित्रं निर्माय शिक्षकाय दर्शयत।

© NCERT not to be republished